गुरु पूर्णिमा

प्रिय पाठकवर, पिछली बार मैंने गुरु पूर्णिमा के विषय में आपसे कुछ बातचीत की थी| क्या आप जानते हैं कि अच्छे गुरु का एक लक्षण यह भी है कि वह अपने शिष्य से पराजय कि इच्छा करे? हां, चौंकिए नहीं; यह बड़े भाग्य की बात मानी जाती है कि एक गुरु को ऐसा शिष्य मिले जो उसे परास्त कर सके!

भगवान व्यास के नाम से गुरुपूर्णिमा को जाना जाता है और उसे व्यास पूर्णिमा भी कहते हैं| व्यास महान थे, उन्होंने वेदों को विभाजित किया तथा उनके स्वरूप को व्यवस्थित बनाया| ज्ञान को ठीक व्यवस्था प्रदान की, अत:कहते हैं--विव्यास वेदान् तस्मात व्यास: अर्थात वेदों को विभाजित किया और उन्हें व्यवस्था प्रदान की| चन्द्रमा की सोलह कलाएं होती हैं जो पौर्णिमा के दिन दिखाई पडती हैं, तब उनका नाम बन जाता है-सकल; और स्त्रीलिंग वाली कलाओंमें परिवर्तन होकर वे पुल्लिंग में बदल जाती हैं| उन्हें कहा जाता है --सकल अर्थात पूर्ण चन्द्र, यह पूर्णता का प्रतीक होता है| ज्ञान के लिए दूसरा शब्द है- प्रकाश, गुरु का ज्ञान पूर्ण प्रकाश होता है, अत: पूर्णिमा को गुरुपूजन किया जाता है|

मैंने पिछली बार कहा था की हैदराबाद के शिविर के विषय में अगले 'संगीत मंथन' के अंक में बताउंगी| यह शिविर दोदिन का रहा| हैदराबाद के गान्धर्व महाविद्यालय ने इसका आयोजन किया था| दोनों दिन प्रात:काल के ९ बजे से दोपहर १२ बजे तक मैंने तराने सिखाए| परम्परागत ढंग से प्रथम तराना गाकर सुनाना, पश्चात सिखाना; ऐसा क्रम रहा| पहले दिवस ४ तराने विद्यार्थियों ने सीखे| इस शिविर की यह विशेषता रही कि छात्र छत्राओं के साथ बड़े बड़े वकील, इंजीनीयर, सी.ए., बड़ी फर्मो के मालिक, प्रसिद्ध स्टूडियो के संचालक ये सभी लोग एवं संगीत शिक्षक, शिक्षिकाएं इतना ही नहीं; अपितु पंडिता मालिनी जी राजुरकर जैसी मशहूर गायिका भी शिविर में हिस्सा ले रही थीं| सभी के हाथों में सिखाए जाने वाले तरानों की ज़ेरॉक्स प्रतियाँ के प्रथम भाग की थीं| कमाल का माहौल था| सभी मन से सीख रहे थे| १२-३० से आगे घड़ी की सुइयाँ सरकने लगीं और उस सत्र की समाप्ति हुई|

दूसरा सत्र दोपहर २-३० को शुरू हुआ| इस समय सब ने सीखे हुए तरानों का अभ्यास किया, जो त्रुटियाँ रह गयी थीं उन्हें सुधारा| भीमपलासी, यमन, भैरव और अल्हैया बिलावल रागों में तराने सखे थे, उनको पक्का कराया गया| संध्या समय में एक तराना प्रस्तुत किया जाने वाला था, उसकी भी विशेष तैयारी की गयी |

संध्या कालीन सत्र में ' पिछली शताब्दि में हुआ सांगीतिक विकास एवं सम सामयिक प्रयासों पर उसका प्रभाव 'कुछ इस प्रकार के विषय को लेकर पं.दडपे जी ने चर्चा को विस्तारित किया| बीसवीं सदी के शुरू में रहा संगीत का माहौल, पं .पलुस्कर एवं पं.भातखंडे जी द्वारा किया गया संगीत का विकास,पं .विष्णु दिगम्बर जी द्वारा नोटेशन में किया गया आविष्कारी काम, महिलाओं को गायन सीखने में

उनकी दूरदर्शिता, इ. विषयों के साथ ही पं. दडपे जी ने विविध देशो के संगीत की जानकारी दी| उनके गहन गम्भीर व्याख्यान को काफी सराहा गया| पश्चात दो छात्राओं ने राग भीमपलासी के तराने को विस्तार से और सीखी हुई सभी हरकतों के साथ पेश किये| इससे शिविर की शिक्षिका डॉ.सुधा पटवर्धन की और उन छात्राओं की भी भूरि भूरि प्रशंसा हुई| इसके बाद अंतिम व्याख्यान डॉ.सुधाजी का था--स्वप्नदर्शी संगीतज्ञ पं.विष्णु दिगंबर जी के चरित्र के विविध आयाम --जिनमे प्रमुख रूप से उनका सही मायने में दूरदर्शित्व अधोरेखित किया गया| अन्य घरानों के कलाकारों से सम्बद्ध बनाना, उन्हें स्न्गेत परिषदों में आमंत्रित क्रा, सम्भ्रान्त परिवारों की महिलाओ को सगीत विश्व में स्थिरता पूर्वक गाने बजाने की सुविधा देना, सुधारित रूप में गुरुकुल की स्थापना, गान्धर्व महाविद्यालय की स्थापना, शिष्यों को गायक, वक्ता, प्रचारक बनाना, स्थान स्थान पर गान्धर्व महाविद्यालय की शाखाएँ खोलकर अपने शिष्यों को वहाँ प्रमुख आचार्य के रूप में स्थापित करना, वाद्यों की मरम्मत, छापाखाने का काम और मृदंग तबला वादन, नृत्य की शिक्षा देंना ये सभी आयाम उनमे थे| एक औरों की अपेक्षा कम देख सकने वाला मानव कितना दूरंदेश हों सकता है, इस विषय में सुधा जी ने अच्छा खासा विवरण दिया| भाषण की समाप्ति के साथ ही इस दो दिवसीय शिविर के प्रथम दिवस के समापन की घोषणा हुई|

द्वितीय दिवस को अपेक्षाकृत कुछ कठिन तराने सिखाए गए| राग दुर्गा में पं. विष्णु दिगंबर जी द्वारा रचित तराना सिखाया गया| पश्चात रचना की प्रकृति की दृष्टि से ललित ढंग का राग तिलंग का तराना सिखाया गया| राग मालकौंस का वीर रस पूर्ण तराना भी बड़े चाव से सब ने सीखा | पिछले दिन तराने की प्रकृति तथा प्रवृत्ति का ज्ञान हों चुका था, अत: दूसरे दिन की शिक्षा अधि गतिपूर्ण रही| सत्र की समाप्ति के बाद २२ जुलाई को दोपहर का सत्र न था| संध्या के समय गान्धर्व महाविद्यालय के छात्र एवं शिक्षक दोनों की पेशकश के पश्चात कार्यक्रम की समाप्ति की घोषणा हुई और इस दिलचस्प कार्यक्रम के अत में कुछ अजीब सी शान्ति और सीख की प्रतीति हुई| यदि ऐसे शिविरों का आयोजन आगे भी लोगबाग करें तो शिक्षक और छात्रों का निश्चय ही लाभ होगा|
आज यहीं विदा लेती हूँ| आगे नए विषय के साथ मिलेंगे; तब तक के लिए नमस्कार|

GURU POURNIMA

Dear readers, last time on the topic of "Guru Pournima", I had mentioned a few things. Do you know that a good Guru's goal, is to wish for a defeat from his Shishya ? Yes, don't get surprised, it is recognized as a good fortune for a Guru to have a student, who can conquer him.

Lord Vyas's name is connected with Guru Pournima and that is the reason why it is also called as Vyas Pournima. Lord Vyas was great, who divided Vedas and recognized them. Vedas' knowledge was given better understanding. Therefore, it is said that "विव्यास वेदान तस्मात व्यास:" (Vivyaas vedaan tasmaat vyaasah) meaning the Vedas were divided by Vyaas and were organized in a proper manner. The moon has sixteen artistic forms, all of them can be visualized on a full moon night. That is when they are called 'sakal'. The feminine aspect of art form of the moon changes to masculine aspect. That is called 'sakal' or full moon. This represents the perfection or completeness. Another word for knowledge is "light". Guru's knowledge is like full moon, symbol of complete knowledge. That is why Guru is worshipped on the day of Guru Pournima.

Last time, I had mentioned that I would speak in next article about the workshop conducted at Hyderabad. This workshop lasted for 2 days. Gandharva Mahavidyalaya of Hyderabad had arranged this. Both days, from 9am till noon, I taught taraanaas. Initially, singing taraanaa in traditional style and then teaching the same, was the sequence. On the first day, students learnt 4 taraanaas. The specialty of this workshop was that not only students but also renowned lawyers, Engineers, C. A. , owners of well-known firms, directors of famous studios, and music teachers were part of this workshop. On top of that, famous classical singer Pandita Malini Rajurkarji had also taken part in the workshop. Everybody was holding zerox copies (first part) of taraanaas being taught. The atmosphere was great. Everyone was learning with deep interest. After 12-30pm, the hands of the clock flew and that session ended.

Second session started at 2-30pm. Each one studied the taraanaas which were taught, errors were corrected. Taraanas taught in raags Bhimpalaasi, Yaman, Bhairav and Alhaiyya-Bilaawal were perfected. Special practice was done for the taraanaa which was being performed in the evening session.

In the evening session, Pt. Dadapeji prolonged the discussion under some subjects like 'Musical progress in last century and also its impact on contemporary efforts'. Pt. Dadapeji elaborated various topics like the atmosphere

of music in the beginning of 20th century, development of music by Pt. Paluskarji and Pt. Bhatakhandeji , the great work carried out by Pt. Vishnu Digambaraji in music notation, his foresight in learning music for females and also described music of various countries. His very informative lecture on music was really appreciated. After that, two students performed taraana in raag Bhimapalasi in detail while applying all previously taught minute details. Everybody expressed appreciation towards the teacher of the workshop Dr. Sudha Patwardhan and those students. Finally the last talk was given by Dr. Sudha Patwardhan on the various dimensions of biography of dreamer musicologist Pt. Vishnu Digambarji –in which his prudence is truly underlined in substantial form. Making contacts with performers of other gharaanaas, inviting them at music conferences and giving opportunities to female performers of elite families to sing/play instrument in music world with stability, establishment of improved form of Gurukul , foundation of Gandharva Mahavidyalaya, building his disciples a singer, an orator, a propagator and opening branches of Gandharva Mahavidyalaya at various places and enunciate his followers there as head master of the institute. His expansion of work also included repair of the instruments, work of printing press and providing education of playing mrudang, tabalaa, dance . All these aspects were covered. Sudha gave substantial details of how one human being who has less eyesight than others can have such farsightedness. With the end of her speech, completion of the first day of this 2-day workshop was announced.

Second day, comparatively difficult taraanaas were taught. A taraanaa composed by Pt. Vishnu Digambarji in raag Durga was taught. Later, according to the beautifully genteel composition style, Raag Tilang tarana was taught. Everybody learnt the heroic style tarana of raag Malkauns with a lot of interest. Previous day, nature of the taranaas and its characteristics were already learnt. Therefore, the second day's teaching was speeded up. After the end of the session, there was no session in the afternoon of July 22nd. In the evening time, Gandharva Mahavidyalaya students and teachers, both had a presentation and then end of the program was announced. At the end of this wonderful program, there was a realization of stunning peace and learning. In the future, if people organize this kind of workshops, it is beneficial to both students and the teachers. With this, I am taking the leave for today. Next time we will meet, with a different topic. Till then good bye!!!